ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे — निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26 अंकः 31 बुलेटिन अवधिः 19–23 अप्रैल, 2017 दिनः मंगलवार दिनाँकः 18 अप्रैल 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर **कृषि मौसम विज्ञान विभाग** में स्थित **कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर** द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	19–04–2017	20–04–2017	21–04–2017	22–04–2017	23–04–2017
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	5
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	37	36	35	34	33
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	22	22	22	22	21
बादल आच्छादन	साफ	आंशिक बादल	आंशिक बादल	मध्यम बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	80	80	85	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	45	50	55
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	08	12	12	08	06
वायु की दिशा	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व

आगामी दिनो में मौसम शुष्क रहने व 23 अप्रैल को कही कही हल्की बारिश होने तथा आसमान में हल्के से घने **बादल छाये रहने के साथ हवा के तेज** गति **से पूर्व–दक्षिण–पूर्व दिशा से चलने की सम्भावना है।**

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (11 से **17 अप्रैल** 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहा तथा 0.0 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 33.1 से 37.6 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 13.5 से 22.8 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 45 से 81 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 17 से 38 प्रतिशत एवं हवा 4.2 से 10.6 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व–दक्षिण–पूर्व व पूर्व–उत्तर–पूर्व दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- ❖ गेहूँ एवं दलहनी फसलों की कटाई एवं मड़ाई का कार्य करें।
- ❖ अगर गेहूँ की कटाई के बाद विलम्ब से गन्ना की बुवाई करनी हो तो इसे अप्रैल माह में पूरा कर लें। बुवाई हेतु गन्ना के 1/3 से 1/2 ऊपरी हिस्सों को बीज में प्रयोग करें। बीजोपचार से पूर्व बीज को 24 घंटे पानी में भिगोएं। इससे जमाव में आशातील बढ़ोत्तरी होती है। बीज शोधन होतु 1 ग्राम कार्बेडाजिम 50 प्रतिशत को एक लीटर पानी की दर से घोल बनाए।
- ❖ विलम्ब से बुवाई में CoS88230, CoS95255, CoS95222, CoS97264, CoPant84212 आदि प्रजातियों का चुनाव करें। संतुलित उर्वरक 100–120:60:40 एन0पी0के0/है0 का प्रयोग करें। बुवाई के समय 60 कि0ग्रा0 N, 60 कि0ग्रा0 P_2O_5 व 40 कि0ग्रा0 K_2O प्रति है0 का उपयोग करें।
- ❖ दलहनी फसलों जैसे मटर, मसूर तथा चना की कटाई फसल पकने के तुरंत बाद सुबह के समय करें अन्यथा दाने झड़ने से नुकसान होता है। भण्डारण से पूर्व दानों को अच्छी तरह से सुखा लें।
- ❖ अप्रैल माह में पशुओं हेतु हरे चारे की कमी के समाधान हेतु इस समय बहु कटाई वाली ज्वार, लोबिया, मक्का, बाजरा आदि फसलों को चारे हेतु बुवाई करें। भरपूर उत्पादन हेतु ज्वार की बुवाई अप्रैल के दूसरे सप्ताह तथा बाजरा एवं लोबिया की बुवाई अप्रैल के अंत तक अवश्य पूरा कर लें।
- ❖ अप्रैल में मेंथा की खेती रोपाई विधि से करें इसके लिए मेंथा की 40–45 दिन की पौध की रोपाई 40 से0मी0 की दूरी पर बने लाईनों में 15–20 से0मी0 की दूरी पर करें।
- ❖ मेंथा की खड़ी फसल में पहली कटाई के 10–15 दिन बाद अगर खरपतवार दिखें तो एक बार निराई गुड़ाई करें।
- ❖ चना में फलीबेधक के नियंत्रण के लिए क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 125 मि0ली0/है0 या इमामेक्टीन बेन्जोएट 5 एस0जी0, 220ग्राम/है0 या नोवाल्यूरान 10 ई0सी0, 750 मि0ली0/है0 या लैम्डासाइहेलोथ्रिन 5 ई0सी0, 500मि0ली0/है0 500लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

उद्यान प्रबन्धः

- ❖ बैगन व भिंडी की फसल में हल्की निराई–गुड़ाई के साथ सिंचाई करे।
- ❖ लहसुन की फसल इस माह के अन्त तक फसल तैयार हो जायगी। फसल काटने से 15 दिन पूर्व सिंचाई बन्द कर दें।
- ❖ मटर की पकी हुई फसल की कटाई करे व पौधो को 1–2 दिन तक खेत में सूखने दे।
- ❖ हल्दी, अदरक एवं अरबी की बुवाई करे।
- ❖ कद्दू वर्गीय सब्जियो में पत्तियॉ यदि चितकबरी दिख रही हो या मुड़ रही हो तो ऐसे पौधो को निकाल नष्ट करे एवं रस चूसने वाले कीड़ो से बचाव हेतू सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करे।
- ❖ मिर्च एवं टमाटर की उपरी पत्तियो पर बारीक चितकबरे धब्बे दिखाई देने पर सर्वांगी कीटनाशी का 10 से 15 दिन के अन्तराल पर नियमित छिड़काव करे।
- ❖ फ्रासबीन एवं लोबिया में नये पौधे सूखने दशा में कार्बनडाजिम 1 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर जड़ो की सिचाई करे। यदि बड़े पौधो में पत्ते पीले पड़ने एवं झुलसने की दशा में इसी रसायन का पत्तियो पर छिड़काव करे।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।
- ❖ बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का उपयोग करे।
- ❖ फल आच्छादन के बाद सूक्ष्म पोषक तत्वो का संतुत मात्रा में छिड़काव करे।
- ❖ फल अच्छादन होने के उपरान्त मैंगो हौपर के प्रकोप होने की स्थिति में इमिडाक्लोरपिड का 3 मि0ली0 /10लीटर के हिसाब से आम में छिड़काव करें।
- ❖ बागों में समय–समय पर सिंचाई सुनिश्चित करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- गर्मी से बचाने हेतु पशुओं को संतुलित आहार जिसमें सभी पोषक तत्व प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण तथा विटामिन्स उचित मात्रा एवं उचित अनुपात में उपस्थित हों, देवें। सूखे चारे के साथ हरा चारा एवं दाना अवश्य दें।
- अप्रैल माह से भैंसों को पशुशाला में सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक रखना चाहिए, जिससे उन्हें तेज धूप से बचाया जा सके।
- मुर्गियों के अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उनके आवास के तापमान का विशेष ध्यान रखें, उन्हें खाने के लिए सन्तुलित आहार दें तथा साफ–सुथरा एवं ताजा जल उपलब्ध करायें।
- पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए ताकि उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें। बैठने का स्थान समतल ना होने पर पशु खड़ा रहेगा जिससे वह तनाव में आ सकता है और उत्पादन क्षमता प्रभावित होगी।
- जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के बैठने के स्थान पर सूखा चारा अथवा सूखी घास बिछा दें। प्रसव के उपरांत पशु पालक स्वच्छता की ओर विशेष ध्यान दें।
- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15 सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिलाना लाभकारी होता है। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर